लच्छन

१

जली बारूद की गध छोडते खाली कारतूस, भेड की हड्डी, फौजी नक्शा, सैनिक गतिविधियो की रिपोर्ट, घोडे के पसीने की गधवाली लगाम, डबल रोटी का टुकडा—यह सब एक ही मेज पर पडा है। उधर खिडकी के दासे से पीठ टिकाये निकोल्का कोशेवोई सीलन के कारण फफूद लगी खुरदरी बेच पर बैठा है। उसकी ठड मे अकडी उगलियो मे पेसिल है। मेज पर फैले पुराने पोस्टरो के पास आधा भरा फार्म है। खुरदरे पन्ने पर बस यही लिखा है कोशेवोई निकोलाइ। स्क्वाड्रन कमाडर। खेतीहर परिवार से। रूसी युवक कम्युनिस्ट लीग का सदस्य।

आयु के खाने मे पेसिल ने धीरे-धीरे लिखा १८ वर्ष।

निकोल्का के कधे चौडे है, उम्र मे बडा लगता है। झुर्रियो मे घिरी आखो और बूढो की तरह झुकी कमर के कारण वह प्रौढ लगता है।

"बिल्कुल बच्चा है, छोकरा ही है, होठो पर मा का दूध भी नही सूखा अभी," स्क्वाडनवाले मजाक मे कहते है, "पर लाख ढूढने पर भी ऐसा दूसरा नही मिलेगा। दो-दो गिरोहो का सफाया कर चुके है और अपना नुक्सान न के बराबर है। पूरे छह महीने से स्क्वाड्रन को ऐसी-ऐसी लडाइया लडा रहा है। किसी पुराने कमाडर से उन्नीस नही है।"

निकोल्का को अपनी अठारह वर्ष की उम्र पर शर्म आती है। हमेशा उम्र के मनहूस खाने मे पहुचकर पेसिल अटक जाती है और निकोल्का के कपोल शर्म के कारण लाल हो जाते है। निकोल्का का पिता कज्जाक था मतलब वह भी कज्जाक ही हुआ। उसे धुधले सपने की तरह याद आता है कि जब वह कोई पाच-छह साल का था तो पिता ने उसे अपने फौजी घोडे पर बिठाया था।

"बेटा अयाल कसके पकडे रह!" पिता जी चिल्लाकर कह रहे

थे और मा रसोई के दरवाजे मे खडी निकोल्का की ओर देखकर मुस्करा रही थी, उनके चेहरे का रग उडा-उडा-मा था, आखे फडे कभी वह घोडे की पीठ से चिपटी नन्ही टागो को, तो कभी लगाम पकडे पिता जी की ओर देख रही थी।

यह बहुत पुरानी बात है। फिर जर्मनी की लडाई म निकोल्का का पिता लापता हो गया। उसके ठौर-ठिकाने की कोई खबर नही मिली। मा भी मर गयी। निकोल्का को अपने पिता मे विरासत मे घोडो मे प्यार, अदम्य साहस और लच्छन मिला था – कबूतरी के अडे जितना बडा, ठीक वैसा जैसा पिता के था, बायी टाग पर टखने से कुछ ऊपर। पद्रह साल की उम्र तक नौकरी-चाकरी करता रहा और बाद मे किसी से बरानकोट मागकर गाव मे गुजरती लाल रेजीमेट के माथ व्रागेल* की फौज मे लडने चला गया। इन्ही गर्मियो की बात है, निकोल्का सैन्य कमिसार के माथ दोन मे नहा रहा था। वह निकोल्का की धूप से मावली कुबडी पीठ को थपथपाकर हकलाता हुआ बोला

"तु-तुम भ-भ-भाग्यशाली हो! ह-हा, भाग्यशाली हो! लच्छन कहते है, भाग्य की निशानी होता है।"

निकोल्का ने अपने चिट्टे दात चमकाकर गोता लगाया थोडी दूर जाकर मिर बाहर निकाला और फुफकारकर चिल्लाया

"तुम भी क्या अजीब बात कहते हो! बचपन से यतीम हू, जिदगी भर लोगो की चाकरी करते-करते कमर झुक गयी और तुम कहते हो भाग्यशाली हू! "

और दोन को अपने आगोश मे समेटती पीली मकरी रेती की ओर तैर पडा।

२

वह घर जिममे निकोल्का टिका था दोन के ऊचे किनारे पर स्थित था। खिडकी से हरा कछार और पानी की मलेटी धारा दिखायी पडती थी। तूफानी रात को लहरे किनारे से टकराती, खिडकियो के कपाट

* गृहयुद्ध मे एक प्रतिक्रातिकारी जनरल। – स०

चरमराते और निकोल्का को लगता कि फर्श की दरारो मे रिसकर घर मे भरता पानी मकान को झिझोड रहा है।

वह मकान बदलना चाहता था पर शरद तक बस वही रह गया। ठिठुरन भरे प्रातःकाल की नीरवता को नाल जडे बूटो की ठकाठक से भग करता निकोल्का ड्योढी मे निकला और चेरी की बगिया मे ओस मे नम रुपहली घास पर लेट गया। कोठरी मे घर की मालकिन गाय को शात खडा रहने के लिये पुचकार रही थी, बछडा जोर-जोर से रभा रहा था और बाल्टी मे दूध की धार गिरने की आवाज आ रही थी।

अहाते का फाटक खटका, कुत्ता भौकने लगा। प्लाटन नायक की आवाज सुनायी पडी

"कमाडर घर पर है?"

निकोल्का कोहनियो के बल उठकर बोला

"यह रहा! क्यो, क्या हुआ?"

"कस्बे मे हरकारा आया है। कहता है कि माल्स्क इलाके से गिरोह आया है, ग्रशिन्स्की राजकीय फार्म पर कब्जा कर लिया उसने"

"बुलाओ उसे।"

हरकारा गर्म पसीने से तर घोडे को अस्तबल की ओर खीच ले चला। पर वह आगन के बीचो-बीच पहले अगली टागो पर गिर पडा और फिर बगल पर लुढक गया, नथुने फडकाकर उसने दम तोड दिया। उसकी जड आखे जजीर मे बधे भौक-भौककर बेहाल कुत्ते पर टिक गयी। बेचारे घोडे को इसलिये दम तोडना पडा क्योकि उस लिफाफे पर जो हरकारा लाया था क्रॉस के तीन चिन्ह बने हुए थे और हरकारा बिना कही दम लिये चालीस वेर्स्ता* तक घोडे को बेतहाशा दौडाता लाया था।

निकोल्का ने पढा कि अध्यक्ष उसके स्क्वाड्रन की सहायता माग रहा था। कमरे मे तलवार लटकाते समय उसने थकान के साथ सोचा

"कही पढने-वढने के लिये जाना चाहिये, इधर यह गिरोह आ टपका कमिसार ताना मारता है कि एक शब्द भी ठीक से लिख पाता नही

---

* १ वेर्स्ता–१.०६ किलोमीटर। –स०

और कहने को स्क्वाड्रन का कमाडर है मेरा इसमे क्या दोष है कि चर्च का स्कूल पास करने तक का वक्त नही मिला? वह भी बडा अजीब है और इधर यह गिरोह आ टपका फिर खून-खराबा होगा, मै तो थक गया हू ऐसी जिदगी से इस सब से जी उकता चुका है "

वह चलते-चलते कारबाइन मे गोलिया भरता हुआ बाहर निकला, दिमाग मे घोडो की तरह विचार सरपट दौडते जा रहे थे "शहर जाने को जी चाहता है कही कुछ पढ-वढ लेता "

मरे घोडे के पास से वह अस्तबल की ओर जा रहा था, धूल भरे नथुनो से बहती खून की ऊदी धार को देखकर उसने मुह फेर लिया।

३

ऊबड-खाबड कच्ची सडक पर छकडो की लीको मे घनी जगली घास उगी हुई थी। कभी इस रास्ते से स्तेपी मे सुनहली बूदो की तरह छिटके खलिहानो को किसानो की बैलगाडिया आती-जाती थी। मुख्य मार्ग टेलीग्राफ के खभो के साथ-साथ जाता था। खभो की पात बीहडो और घाटियो को पार करके शरतकालीन धुध मे विलीन हो रही थी और खभो के साथ-साथ जाते मार्ग पर सरदार अपने गिरोह को लिये जा रहा था। गिरोह मे सोवियत सत्ता से असतुष्ट दोन और कुबान के पचास कज्जाक शामिल थे। तीन दिन और तीन रातो मे वे रेवड मे मुह मारे भेडिये की तरह पगडडियो और बीहडो मे भागे जा रहे थे, और निकोल्का कोशेवोई का दस्ता लगातार उनका पीछा कर रहा था।

गिरोह मे भूतपूर्व फौजी, शातिर और दुसाहसी लोग शामिल थे, फिर भी उनका सरदार चितित था रकाब के बल उचक-उचककर आखो से स्तेपी को छान रहा था, दोन के उस पार फैली वन की नीलाभ पात तक दूरी का अनुमान लगा रहा था।

बस ऐसे ही भेडियो की तरह लुकते-छिपते वे जा रहे थे और निकोल्का कोशेवोई का स्क्वाड्रन उनके सिर पर सवार था।

गर्मियो मे निर्मल आकाश तले दोन की स्तेपियो मे गेहू की लह-

लहाती बालिया चादी की तरह झकार करती है। लुनाई से पहले सलोने, ठोस गेहू की बालियो के गुच्छे सत्रह बरस के छोकरे की मूछो की तरह काले हो जाते है और जौ की बालिया आदमी से ऊचाई मे होड करने लगती है।

दाढीवाले कज्जाक किसान वनो-कुजो के किनारे दुम्मट मिट्टी मे रेतीले टीलो पर जौ बोते है। फसल उसकी कोई खास नही होती, कभी भी एक एकड मे चार-पाच मन से अधिक नही रहती। पर बोते इसलिये है कि जौ से देसी वोद्का बनती है, ओस जैसी निर्मल, क्यो-कि पीढी-दर-पीढी उनके पुरखे पीते आये है। शायद इसीलिये दोन प्रदेश के कज्जाको के राज्यचिन्ह पर भी शराब के पीपे पर बैठा नगा कज्जाक बना था। पतझड के दिनो मे बेद की टहनियो की बाडो के पीछे कज्जा-को की टोपिया लडखडाती नजर आती।

इसीलिये सरदार भी रोज धुत्त रहता, इसीलिये मशीनगनवाली बग्घियो मे गाडीवान और मशीनगन चालक नशे मे झूमते रहते।

गिरोह के सरदार ने सात साल से अपने गाव के दर्शन नही किये थे। पहले जर्मनो की कैद मे रहा, फिर व्रागेल की फौज मे भरती हो गया, धूप मे तपता कोन्स्तानतीनोपोलिस, कटीले तार से घिरा बदी शिविर, फिर पालदार तुर्की किश्ती, कुबान के घने सरकडे और अब यह गिरोह।

बस यही थे सरदार की जिदगी के मुकाम। उसका दिल वैसे ही कठोर हो गया था जैसे कि स्तेपी मे झील के सूखे कीचड मे ढोरो के खुरो के निशान। अदर ही अदर से घुन की तरह अजीब-सा दर्द उसे कुतर रहा था, अग-अग मे क्लाति व्याप्त थी। सरदार महसूस करता था कि इस दर्द और पीडा को किसी भी शराब से नही बुझाया जा सकता। पर पीता था—एक दिन भी होश मे नही रहता था क्यो-कि दोन की स्तेपियो म पके जौ की मधुर गध व्याप्त थी और गावो-कस्बो मे फौजियो की गौरवर्ण बीविया ऐसी वोद्का बनाती थी जैसे चश्मे का बहता पानी।

६

सुबह तडके इस साल का पहला पाला पडा। कुमुदिनियो के चौडे पत्तो पर चादी की तरह बिखर गया, लुकीच को सुबह पनचक्की के

पहिये पर अभ्रक की तरह चमचमाते हिमकण दिखाई दिये।

सुबह से लुकीच की तबीयत खराब थी कमर दुख रही थी, तीखे दर्द मे पैरो मे मानो सीसा भर गया था। वह चक्की का मुआ-यना करने लगा, बडी मुश्किल मे पाव घसीट रहा था, बेढब बदन का हाड-मास उसे अलग-अलग होता लग रहा था। दलिया दलने की मशीन से चूहो की बिरादरी निकलकर दौडी, पानी से भरी नम आखे उसने ऊपर उठायी छत की कडी पर बैठा कबूतर गुटरगू कर रहा था। नथुनो से, जो चिकनी मिट्टी से बने लगते थे, बूढे ने सीलन की घुटन भरी बू और पिसे गेहू की सुगध को फेफडो मे खीचा, कान लगाकर सुनने लगा पानी गुड-गुड करता, चटकारे लेता उन बल्लियो को चूम रहा था जिन पर पनचक्की टिकी थी। सोच मे डूबकर वह अपनी दाढी मसोसने लगा।

लुकीच दम लेने के लिये मधुवाटिका मे जाकर लेट गया। भेड की खाल का ओवरकोट ओढकर सो गया, मुह खुला था, होठो के कोनो मे जमी लसदार और गर्म राल से दाढी भीग रही थी। साझ के झुटपुटे ने बूढे की कुटिया पर स्लेटी रग पोत दिया था कोहरे के दूधिया चिथडो ने पनचक्की को लपेट लिया

जब लुकीच की आख खुली तो उसे जगल से आते दो घुडसवार नजर आये। उनमे से एक मधुवाटिका मे बूढे को देखकर चिल्लाया

"बाबा, इधर आओ!"

लुकीच शक की नजर से उन्हे देखकर खडा हो गया। इन अशात वर्षो मे वह ऐसे अस्त्रधारी लोगो को बहुत देख चुका था जो बिना पूछे चारा और आटा ले लेते थे। कोई भेद किये बिना वह उन सबसे गहरी नफरत करता था।

"जल्दी आ, खूसट बुड्ढे!"

छत्ताघरो के बीच से, बदरग होठो से निशब्द बुदबुदाता हुआ लुकीच धीरे-धीरे चलकर मेहमानो से कुछ दूरी पर खडा हो गया। वह उनको तिरछी नजरो से देख रहा था।

"हम लाल फौज के है, बाबा तुम हमसे डरो नही," शात स्वर मे सरदार फुसफुसाया। "हम गिरोह का पीछा कर रहे है, अपने लोगों से पिछड गये है कल यहा से कोई दस्ता गुजरा था, शायद तुमने देखा हो?"

"हां कोई गये तो थे इधर से।"

"बाबा, किधर गये वो?"

"शैतान जाने, मेरी बला से!"

"तुम्हारी चक्की में तो उनमें से कोई नही रहा?"

"नहीं," कहकर लुकीच ने उनकी ओर पीठ फेर ली।

"रुक बुड्ढे।" सरदार कूदकर घोड़े से उतर गया, टेढ़ी टांगों पर नशे में डगमगाया और मुंह से देसी वोद्का की तीखी बू छोड़कर बोला: "हम, बाबा, कम्युनिस्टों का सफ़ाया कर रहे हैं... हां-हां!.. और हम है कौन, यह तुम्हारी अक्ल की बात नही!" उसे ठोकर लगी और लगाम हाथ से छूट गयी। "तुम्हारा काम बस सत्तर घोड़ों के लिए चारा देना और चुप रहना है... पलक झपकते ही हो जाना चाहिये यह काम!.. समझे? कहां है अनाज?"

"नही है," नज़र चुराकर लुकीच बोला।

"उस कोठरी में क्या है?"

"कबाड़-वबाड़ भरा है... अनाज नही है!"

"चल ज़रा, देखूं मैं भी!"

बूढ़े का कालर पकडकर घुटने से धक्के देता वह ज़मीन में धंसी टेढ़ी दीवारोंवाली कोठरी की ओर चल पड़ा। दरवाज़ा खोला। खत्तियों में गेहूं और जौ भरा था।

"क्या यह अनाज नही है, हरामी बुड्ढे?"

"अनाज है, अन्नदाता... पिसाई के लिये है... साल भर एक-एक दाना करके मैंने इसे जमा किया और तुम हो कि घोड़ों को खिलाना चाहते हो..."

"तो तू क्या चाहता है कि हमारे घोडे भूखों मर जायें? तू क्या लालवालो का तरफ़दार है, अपनी मौत को बुलावा दे रहा है?"

"दया करो मुझ पर, भले आदमी! मेरा क़सूर क्या है?" टोपी उतारकर लुकीच घुटनो पर गिर पडा और सरदार के बालों से ढके हाथों को चूमने लगा...

"बोल: तुझे लालवाले पसंद हैं?"

"माफ़ करो मुझे, रहमदिल!.. मेरी बेवक़ूफ़ी माफ़ कर दो।

कर भी दो माफ, मुझे मारो नही," मरदार की टागो मे लिपट कर बूढा गिडगिडाने लगा।

"सौगध खा कि तू लालवालो का तरफदार नही है नही, सलीब बनाने मे काम नही चलेगा, मिट्टी खाकर दिखा! "

बूढे ने मुट्ठी मे रेत भरी और अपने पोपले मुह मे डालकर उसे चबाने लगा, उसकी आखो मे आसुओ की धारा बह रही थी।

"ठीक है, अब मै यकीन करता हू। चल, उठ बुड्ढे!"

बूढा अपनी सुन्न टागो पर खडा न हो पा रहा था। उसे इस हालत मे देखकर सरदार हसने लगा। उधर वहा जमा हुए घुडसवार खत्तियो से निकालकर जौ और गेहू घोडो के पैरो मे डाल रहे थे, आगन को सुनहरे दानो मे पाट रहे थे।

५

कोहरे और धुध मे भरी भोर थी।

लुकीच सतरी की आख बचाकर सिर्फ उसी को ज्ञात पगडडी से सडक से नही, बीहडो और उनीदे वन को पार करता हुआ गाव की ओर दौड पडा।

पनचक्की के पास पहुचकर वह बगल की गली से बडी सडक पर मुडना चाहता ही था कि उसके सामने घुडसवारो की धुधली आकृतिया प्रकट हुई।

"कौन है?" नीरवता मे कडकती आवाज सुनायी दी।

"मै हू " लुकीच बुदबुदाया, हाथ-पाव फूल गये, थर-थर कापने लगा।

"कौन हो? पास है? किस काम से घूम रहे हो?"

"चक्कीवाला हू मै यही की पनचक्की से। काम से गाव जा रहा हू।"

"किस काम से? चलो, कमाडर के पास! आगे-आगे चल " घोडे को आगे बढाकर उनमे से एक चिल्लाया।

लुकीच को अपनी गर्दन पर घोडे के गर्म-नम होठो की अनुभूति हुई और वह लगडाता हुआ गाव की ओर चल पडा।

चौक में खपरैल से ढके मकान के सामने वे रुक गये। संतरी कराह-कर घोड़े से उतरा और उसे बाड़ से बांधकर तलवार खड़खड़ाता ऊंचे ओसारे पर चढ़ा।

"मेरे पीछे-पीछे चलता आ!. "

खिड़कियों में रोशनी टिमटिमा रही थी। उन्होंने घर में प्रवेश किया।

लुकीच को तबाकू के धुएं के मारे छींक आ गयी, उसने टोपी उतारकर झट से देवस्थान की ओर मुंह करके सलीब का चिन्ह बनाया।

"बुड्ढे को पकड़ा है। गांव में जा रहा था।"

निकोल्का ने मेज़ पर टिका अस्त-व्यस्त बालोंवाला अपना सिर उठाया, उनीदे, पर कड़े स्वर में पूछा:

"कहां जा रहा था?"

लुकीच आगे बढ़ा और ख़ुशी के कारण उसे उच्छू आ गयी।

"अरे, यह तो अपने ही हैं, मैं तो सोच रहा था कि फिर से वो अधर्मी आ गये हैं... बहुत डर गया था, पूछते हुए भी डर लग रहा था... मैं चक्कीवाला हूं। जब मित्रोख़िन के जंगल से तुम लोग जा रहे थे तो मेरे यहां ठहरे थे, मेरे प्यारे, मैंने तुमको दूध पिलाया था . क्या भूल गये?.."

"अच्छा, कहना क्या चाहते हो?"

"मेरे प्यारे, कहूंगा यह: कल शाम को वो गिरोहवाले मेरे यहां आकर घोड़ों को अनाज खिलाने लगे!.. मेरी हंसी उड़ाने लगे... और उनका सरदार बोला: हमारा साथ देने की शपथ ले, ज़बर्दस्ती मिट्टी खिलवायी मुझे।"

"इस वक़्त कहां है?"

"वहीं हैं। अपने साथ ढेरों वोद्का लाये हैं, पापी कहीं के, मेरे घर मे पी रहे हैं और मैं दौड़ा-दौड़ा तुम्हें ख़बर करने आ गया, तुम्हीं कुछ करो उनकी अक़्ल ठिकाने लगाने के लिए।"

"घोड़ो को तैयार करने को कह दो!.. बूढ़े की ओर मुस्कराता हुआ निकोल्का बेंच से उठा और थकान के साथ बरानकोट की आस्तीन खींची।

६

दिन निकल आया था।

रातों जागते रहने के कारण निकोल्का का चेहरा पीला पड़ गया था। वह घोड़े को दौड़ाता हुआ मशीनगनवाली बग्घी के पास जाकर बोला :

"जैसे ही हल्ला बोलेंगे तुम दायें बाजू पर मार करना। हमें उनका पहलू तोड़ना है!"

और मार्च के लिये तैयार स्क्वाड्रन की ओर चला गया।

मरियल बलूतों के कुंज के पीछे सड़क पर घुड़सवार दिखाई पड़े – चार-चार की पांतों में, बीच में मशीनगनोंवाली बग्घियां थी।

"सरपट दौड़ाओ!" निकोल्का चिल्लाया और अपनी पीठ पीछे खुरों की बढ़ती गरज को महसूस करके उसने अपने घोडे को चाबुक लगाया।

वन के आंचल पर मशीनगन बेतहाशा ठक-ठक करने लगी और वे जो सडक पर थे तेज़ी से, जैसे कि युद्धाभ्यास के समय, बिखर गये।

* * *

तूफान से गिरे पेड़ों के ढेर से निकलकर भेड़िया दौडता हुआ टीले पर चढ़ गया। उसके सारे बदन पर गोखरू चिपके हुए थे। थूथनी उठाकर उसने टोह ली। पास ही में धांय-धांय गोलियां चल रही थी, चीत्कारों का नाद-निनाद सुनाई पड़ रहा था।

"ठुक!" – आल्डर के कुंज में गोली चलती और कही टीले के पार से, जोतों के पार से प्रतिध्वनि बड़बडाती – "ठाक!"

और फिर "ठुक, ठुक, ठुक" होने लगी। टीले के पार से जवाब में "ठाक! ठाक! ठाक!" सुनायी पड़ती।

भेड़िया कुछ देर तक खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे घाटी में, सूखी ऊंची घास में विलीन हो गया . .

"संभालकर!.. मशीनगनों की बग्घियों को मत छोड़ना!.. झाडियों में... अरे झाड़ियों में चलो, तुम्हारी मां की!.." सरदार रक़ाब से खडा होकर चिल्ला रहा था।

पर मशीनगनों की बग्घियों के पास गाड़ीवान और मशीनगनचालक हड़बड़ी में रासें काट रहे थे, और मशीनगनों की निरंतर गोलीबारी से जगह-जगह टूटी पांत बिखरकर सिर पर पांव रखकर भाग पड़ी।

सरदार ने घोड़ा मोड़ा, उसकी ओर एक घुड़सवार अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता, तलवार घुमाता आ रहा था। छाती पर झूलती दूरबीन और नमदे के लबादे को देखकर सरदार समझ गया कि यह मामूली लाल सैनिक नही है और उसने अपने घोड़े की लगाम खीची। दूर से ही उसे बिना मूंछोंवाला युवा चेहरा दिखायी पड़ा, क्रोध से विकृत, हवा के कारण मिची-मिची आंखें। सरदार का घोड़ा पिछली टांगे झुकाकर एक ही स्थान पर नाच पड़ा, पेटी में फंसी पिस्तौल को झटके से निकालकर वह चिल्लाया:

"दुधमुंहे पिल्ले! .. घुमा, घुमा अपनी तलवार, मैं तुझे दिखाता हूं! .."

सरदार ने तेज़ी स पास आते काले लबादे पर गोली चलायी। आठ-एक गज़ दौड़कर घोड़ा गिर पड़ा, निकोल्का ने लबादा उतार फेंका, वह गोलियां चलाता हुआ मरदार के पास आता जा रहा था...

झाड़-झखाड़ के पीछे से किसी का वहशी चीत्कार अधूरा रह गया। बादल ने सूरज को ढक दिया और स्तेपी, सडक, हवाओ और पतझड मे ठिठुरते वन पर परछाइया तैरने लगी।

"बच्चा है, होंठों पर दूध अभी सूखा नहीं, ज़रूरत से ज्यादा गर्म-मिज़ाज है, इसीलिये अब इसे मौत अपने पंजो में दबोच लेगी," सरदार के दिमाग़ में रुक-रुककर ये विचार कौंध रहे थे और जब निकोल्का की पिस्तौल खाली हो गयी, तो सरदार ने लगाम छोड़ दी और चील की तरह उम पर झपट पड़ा।

ज़ीन से झुककर उसने तलवार घुमायी, प्रहार से धराशायी होती देह की उसे क्षणिक अनुभूति हुई। सरदार कूदकर घोड़े से उतरा, मृतक की गर्दन से लटकी दूरबीन उतारी, कंपकंपाती टांगों पर नज़र डाली। इधर-उधर देखकर वह झुककर मृतक मे क्रोम-लेदर के बूट उतारने लगा। चटकते घुटने पर पैर टिकाकर उसने झट से एक बूट उतार डाला। दूसरा बूट नही उतर रहा था, शायद मोज़ा खिसक गया था, गुस्मे में गाली देकर उसने झटके से मोज़े सहित बूट उतार लिया। पैर पर, टखने से ऊपर उसे क़बूतरी के अंडे जितना बड़ा लच्छन

दिखायी पड़ा। धीरे-धीरे, मानो उसे डर हो कि कही जाग न जाये, उसने ठंडा पड़ता सिर घुमाकर चेहरा अपनी ओर मोड़ा, मुंह से कलकल बहती ख़ून की धारा से उसके हाथ सन गये। ग़ौर से चेहरे को देखकर ही वह टेढ़े कंधों से लिपटकर भर्रायी आवाज़ में बोला:

"बेटे! .. निकोल्का, बेटे! .. मेरे लाल! .. मेरे कलेजे के टुकड़े! .."

नीला पड़कर वह चिल्लाया:

"कम से कम एक शब्द तो बोल! यह हो कैसे गया?"

बुझती आंखों, ख़ून से तर पलको को देखकर उसने अपना माथा पटका, फिर उठकर निर्जीव देह को झिंझोड़ने लगा.. पर निकोल्का ने नीली जीभ कसकर दांतों में भीच रखी थी, मानो उसे डर था कि कही कोई बड़ी और अहम बात उसके मुह से न निकल जाये।

सरदार ने बेटे के ठंडे पडते हाथों को छाती से लगाकर चूमा और दातों मे पिस्तौल की पसीजी नाल भीचकर अपने मुह में गोली चला दी .

* * *

और शाम को जब झाडियो के पीछे से घुड़सवार प्रकट हुए, हवा उनके स्वरो और रक़ाबो की खड़खड़ को उड़ाकर पास लाने लगी, सरदार के बिखरे बालोवाले सिर से एक गिद्ध अनिच्छा के साथ उडा। उड़कर वह शरत्कालीन धुधले, बदरग आकाश में विलीन हो गया।